8 | NEW DELHI 27 SEPTEMBER 2015 The Sunday Statesman NATIONAL

TEN PEASANTS COMMITTED SUICIDE IN THE PAST WEEK IN TELANGANA, OPPOSITION HOLDS RAO GOVT RESPONSIBLE

Farmers end life as hopes perish with scanty rains

statesman news service

HYDERABAD, 26 SEPT: At least ten farmers, including two women, committed suicide due to severe debt, further aggravated by the lack of rainfall across Telangana.

Another five farmers died of cardiac arrest in Nalgonda and Khammam districts and officials are trying to confirm if they were under pressure due to debt, crop failure or both.

This is the second severe spike in suicides in the past week alone. During the first phase, all Opposition parties blasted the Chandrashekar Rao government for failing to protect the agriculture sector forcing him to agree to have the discussion on suicides immediately when the Assembly reconveyed next week.

Mahboobnagar district reported four suicides, Medak three and Rangareddy, Karimnagar and Adilabad districts reported one suicide each in the past 48 hours. Telangana farmers are facing crop loss for the third successive farming season due to continuous drought.

Sashikala, 30, borrowed Rs 3 lakhs to cultivate her farm in Burgupalli village, Mahboobnagar, and moneylenders asked her to repay the money. Unable to bear the pressure she came to Hyderabad, climbed a three-storied building and jumped to death.

Another woman, Kavita, 28, in Dakur village in Medak, the chief minister's home district, took a loan of Rs 1 lakh to safeguard her cotton crop. Scanty rainfall had dried her farm. She went home, doused herself with kerosene and set herself ablaze.

Silent cry

- The pressure of repayment by the moneylenders forced the farmers to kill themselves
- Their aspiration shattered with no signs of rains in the last leg of the season

In the same district at Munnipalli village, G Ramulu, 48, with eight acres land, took another three acres on lease. He had to pay Rs 4 lakh to local moneylenders. He recently mortgaged part of his farm for Rs 2.2 lakh hoping for a delayed monsoon. With no rainfall this month and after the southwest monsoon retreated, he hanged himself from a tree.

B Narayana, 55, cultivated cotton on three acres land in Singatam village, Medak, the pressure of moneylenders to repay the Rs 6 lakh and the absence of rains compelled him to hang himself in his cattle shed.

In Keshampet village, Mahboobnagar, K Narasimhulu, (45), who owned three acres and took another ten acres on lease had a debt of Rs 6 lakh, over the past 14 months. The early rains enthused him, but soon it vanished and the crop dried. He consumed pesticide.

In the same district at Thondapalli, Balaiah, (40) who owned three acres and took another two acres on lease, suffered the same circumstances as Narasimhulu's and he too hanged himself.

Malappa, (42), in Rangareddy, saw his red gram crop go dry. He recently borrowed Rs 1 lakh for his daughter's marriage and another Rs 1 lakh for farm and household expenses. He consumed alcohol spiked with pesticide. In Metpalli, in Karimnagar, Tilaiah, (57) worked as a watchman.His salary was insufficient to repay his Rs 3 lakh loan for his two-acre farm. He too consumed pesticide. In Lakshmanchanda village in Adilabad, Bhemmanna, 66, borrowed money for the past two years. He worked as farm labour but was unable to repay his debt. He too hanged himself.

News item/letter/article/editorial published on 28/9/15 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)
Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald
M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

पानी छोड़ने का विरोध

कावेरी डेल्टा में प्रदर्शन

बेंगलूरु @ पत्रिका 26-9-15

patrika.com/city

राज्य रैयत संघ व हसिरु सेने ने मुख्यमंत्री सिद्धरामय्या से तमिलनाडु को कावेरी नदी से पानी नहीं छोड़ने का अनुरोध किया है।

रैयत संघ के महासचिव बदगलपुरा नागेन्द्र ने बताया कि राज्य सरकार को जमीनी हकीकत को समझते हुए तमिलनाडु सरकार को पत्र लिखकर अनुरोध करना चाहिए वे पानी छोड़ने के बारे में राज्य पर दबाव न डालें। उन्होंने राज्य सरकार से कृष्णराजसागर व कबिनी बांधों से छोड़े जा रहे पानी को बंद करने की अपील की। राज्य में पेयजल की भारी किल्लत है।

नागेन्द्र ने तमिलनाडु को पानी छोड़ने के मुख्यमंत्री के कदम की कड़ी आलोचना करते हुए कहा, विपरीत परिस्थितियों के बावजूद राज्य सरकार का तमिलनाडु के लिए पानी छोड़ना अनुचित है। मुख्यमंत्री ने पानी छोड़ने का एक तरफा फैसला लेकर किसानों के साथ विश्वासघात किया है।

पानी छोड़ने से पहले मुख्यमंत्री को रैयत संघ व कन्नड़वादी संगठनों की बैठक बुलानी चाहिए थी। उन्होंने कहा, राज्य सरकार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जे.जयललिता के साथ कावेरी पंचाट को कर्नाटक के सूखे के हालात से अवगत कराते हुएपानी छोड़ने में असमर्थता जतानी चाहिए थी। मैसूरु में किसानों ने पानी छोड़ने के खिलाफ आंदोलन छेड़ दिया है। यदि सरकार यही रवैया रहा तो किसान आंदोलन और तेज कर सकते हैं। इस बीच, कमांड एरिया डवलपमेंट ऑथरिटी (काडा) के चेयरमैन दासेगौड़ा ने कहा पानी छोड़ने या न छोड़ने का निर्णय करने का अधिकार सिद्धरामय्या को है।

मण्ड्या में भी नारे

मंड्या. जिले के सैकड़ों किसानों ने कृष्णराजसागर स्थित कावेरी सिंचाई निगम के कार्यकारी इंजीनियर कार्यालय के सामने प्रदर्शन कावेरी नदी से तमिलनाडु को पानी देने का विरोध किया।

किसानों ने प्रदेश सरकार के खिलाफ नारेबाजी कर आरोप लगाया कि कर्नाटक के किसानों की समस्या को दरकिनार कर मुख्यमंत्री तमिलनाडु को कावेरी नदी का पानी छोड़ रहे हैं। मंड्या के किसानों के लिए पीने का पानी नहीं और पड़ोसी राज्य को सिंचाई के लिए पानी दिया जा रहा है।

किसानों के प्रदर्शन को देखते हुए यहां भारी संख्या में पुलिस बल तैनात रहा। उल्लेखनीय है कि सरकार के निर्देश पर कृष्णराजसागर जलाशय से 446 4 क्यूसेक पानी छोड़ा गया है। गुरुवार को जलाशय में 104.8 1 फीट था। इसकी जलभराव क्षमता 124.8 0 फीट है।

साकार हुआ समुद्र मंथन

मंथन कर निभाई परम्परा

सुमेरपुर. नाडोल.घाणेराव @ पत्रिका. मंगल गीत गाती महिलाएं..., बहन को चुनरी ओढ़ाते भाई... और पूजन करते श्रद्धालु...। कमोबेश ऐसा ही नजारा शनिवार को पाली जिले के कई गांवों में देखने को मिला। महिलाओं ने समुद्र मंथन कर लोक संस्कृति को साकार किया। समुद्र मंथन को लेकर लोगों में सवेरे से उत्साह नजर आया। महिलाएं रंग-बिरंगे वस्त्र व आभूषण पहनकर ढोल की थाप और थाली की झनकार के साथ मंगल गान करते हुए तालाब पहुंची। इस दौरान महिलाओं के साथ उनके भाई व परिजन जयकारे लगाते चले। पांच दशक बाद हुए कार्यक्रम में सुमेरपुर के सीणप तालाब, नाडोल के मलोप तालाब व घाणेराव के कराड़ी तालाब पर समुद्र मंथन के लिए भीड़ उमड़ी।

पहले किया पूजन : समुद्र मंथन के तहत लोगों ने पहले विधि-विधान ने मंत्रोच्चारण के साथ तालाब का पूजन किया।

मुखिया परिवार के सदस्य ने सर्व प्रथम समुद डोवन की रस्म अदा की। इसके बाद विभिन्न समाज के लोगों ने निर्धारित स्थान पर तालाब का पूजनकर समंद हिलोरने की परंपरा निभाई।

आसमान से ऐसा दिखता है लाखेला...

राजसमंद जिले का यह पर्यटन स्थल कुम्भलगढ़ का लाखेला तालाब है। जलाशय व आसपास का यह नजारा ड्रोन कैमरे से कैद किया गया है।

दिन में गर्मी, रात में हल्की ठंडक

भोपाल @ पत्रिका

patrika.com/city

राजधानी में एक बार फिर मौसम करवट बदल रहा है। पिछले कुछ दिनों से बारिश का दौर थमने के बाद अब दिन में तेज धूप के कारण लोगों को गर्मी का अहसास हो रहा है, तो रात के तापमान में हल्की गिरावट आ रही है। इसके कारण रात में हल्की ठंड महसूस हो रही है। शुक्रवार को शहर का अधिकतम तापमान 33.2 और न्यूनतम तापमान 19.9 डिग्री दर्ज किया गया। शहर में दो साल बाद सितम्बर में न्यूनतम तापमान 19.9 डिग्री तक पहुंचा है।

तापी-नर्मदा इंटरलिंक से तीन राज्यों को फायदा: उमा भारती

सूरत में बने बनारस घाट पंडाल में आई गंगा सफाई मंत्री

सूरत. सुमूल डेयरी रोड पर अलकापुरी सहयोग गणेश युवक मंडल की ओर से बनाए बनारस घाट पंडाल को देखने केन्द्रीय जल संसाधन एवं गंगा सफाई मंत्री उमा भारती शुक्रवार को सूरत आई।

घाट की थीम पर बने गणेश पंडाल को देखकर वे प्रभावित हुई। इस मौके पर उन्होंने तापी और साबरमती रिवरफ्रन्ट को ध्यान में रखकर गंगा का विकास करने की घोषणा की।

साथ ही तापी और नर्मदा नदी को इंटरलिंक कर इसका लाभ तीन राज्यों को पहुंचाने की भी बात कही। उमा भारती ने कहा कि तापी और नर्मदा को इन्टरलिंक से जोड़ने की योजना पर महाराष्ट्र और गुजरात सरकार से बातचीत जारी है। योजना के सफल होने पर गुजरात के साथ राजस्थान और महाराष्ट्र को भी लाभ मिलेगा। गुजरात के लिए कई योजनाएं हैं। इनमें नर्मदा-तापी, पाल-दमण गंगा और पिंजरल नदी को जोड़ने की योजना भी शामिल हैं।

लगातार दूसरे साल सूखा : देश की 38 फीसदी जमीन झेल रही है पानी की किल्लत

हालात भांपें, अभी से करें तैयारी

प्रो. योगेन्द्र यादव
सीएसडीएस

अकेले नहीं आता अकाल। पानी, प्रकृति और समाज के देशज चिंतक अनुपम मिश्र की इस बात में काफी गहराई है। कुदरत सूखा देती है, अकाल नहीं। हर चौथे-पांचवे साल हमारे देश में बारिश की कमी होती है। लेकिन जरूरी नहीं कि इससे अन्न की कमी हो, पीने के पानी का संकट हो, इंसानों और मवेशियों की जान पर बन आए, खेती-किसानी से जुड़े हर वर्ग में हाहाकार मच जाए। यह तभी होता है जबकि समाज और सरकार सूखे के लिए तैयार न हो। अकाल से पहले आता है विचारों का अकाल, स्मृति का अकाल, भावनाओं का अकाल इसीलिए वे कहते हैं " अकेले नहीं आता अकाल"। आज देश भयानक सूखे से गुजर रहा है। सरकारी हिसाब से सूखा तब कहलाता है जब मानसून की बारिश औसत से 10 फीसदी या इससे भी कम रहे। फिर इसका असर देश के 20 फीसदी या ज्यादा इलाके पर पड़े। पिछले हफ्ते हुई बारिश के बावजूद अब तक इस मानसून में औसत से 14 फीसदी कम पानी पड़ा है। देश की 38 फीसदी जमीन बारिश की भारी या भयंकर कमी का शिकार है। अब मानसून जाने वाला है और इस आंकड़े में ज्यादा बदलाव की गुंजाइश नहीं बची है यानी सूखा आ चुका है, बस सरकारी घोषणा का इंतजार है।

> देश सूखे की आपदा झेल रहा है लेकिन सरकार और शहरी समाज बेखबर है। सरकार निश्चिन्त है कि उसके पास खाद्यान्न भंडार हैं। उसे पैदावार से मतलब है, उत्पादक से नहीं।

सौ साल में तीसरी बार

यह साधारण सूखा नहीं है। लगातार दूसरे साल सूखा पड़ रहा है। पिछले सौ साल में सिर्फ तीसरी बार ऐसा हो रहा है कि लगातार दो साल देश भर में सूखा पड़ा हो। कुल 641 में से 287 जिलों पर सूखे की मार है। करीब सौ जिले ऐसे हैं जो पिछले छः साल से लगातार बारिश की कमी का शिकार हैं। ज्यादातर इलाकों में फसल बुवाई के समय तो बारिश हो गयी, और उससे उत्साहित किसान ने फसल में खर्च भी कर दिया। लेकिन, पौधा निकलते-निकलते बारिश बंद हो गयी, फसल सूख गई। सूखे की सबसे बुरी मार उन इलाकों पर पड़ रही है, जहाँ औसत बारिश कम होती है और जो सिंचाई के लिए बारिश पर निर्भर हैं। यूं तो केरल, कोंकण, नगालैंड और मिजोरम में भी औसत से कम बारिश हुई है लेकिन इन इलाकों पर कुदरत की मेहर है, औसत से कम बारिश भी बहुत है। कमी पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में भी है। लेकिन, वहां सिंचाई के दूसरे साधन उपलब्ध हैं इसलिए एकदम संकट नहीं आएगा। असली संकट उस सूखी पट्टी में है जो उत्तर कर्नाटक से शुरू होकर तेलंगाना, मराठवाड़, मध्य महाराष्ट्र, पूर्वी मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश होते हुए एक तरफ उत्तरी बिहार और दूसरी तरफ पूर्वी राजस्थान और दक्षिणी हरियाणा की ओर जाती है। संकट का एक केंद्र मराठवाड़ा है। पिछले दस दिनों में हालत कुछ सुधरे हैं, नहीं तो पीने के पानी और मवेशियों के चारे के संकट से हाहाकार मच रहा था। अब भी संकट टला नहीं है, भूजल स्तर में काफी गिरावट आ गई है और एक फसल तो मर ही चुकी है।

मुआवजे की तैयारी

संकट का दूसरा केंद्र उत्तर प्रदेश है, जिसके बारे में कोई चर्चा ही नहीं है। इस वक्त देश के 29 जिले भयंकर सूखे का शिकार हैं यानी जहाँ औसत से 60 फीसदी या और भी कम बारिश हुई है। इनमे से 16 जिले उत्तर प्रदेश में है। ये जिले बुंदेलखंड, उससे जुड़े दोआब क्षेत्र में कौशाम्बी से आगरा तक की पट्टी और प्रदेश में पूर्वोत्तर में स्थित है। पिछले कुछ हफ्तों में स्थिति बद से बदतर होती गई है। किसान बारिश की कमी बोरवैल से पूरी करना चाहता है लेकिन बिजली नहीं मिलती। देश सूखे की आपदा से गुजर रहा है लेकिन सरकार और शहरी समाज बेखबर है। खरीफ की फसल को बहुत नुकसान हुआ है लेकिन सरकार निश्चिन्त है कि उसके पास खाद्यान्न के भंडार भरे पड़े हैं। सरकार को पैदावार से मतलब है, उत्पादक से नहीं। अब तक केंद्र सरकार ने एक औपचारिक घोषणा की है कि सूखाग्रस्त जिलों में मनरेगा के तहत रोजगार के दिन 100 से बढ़ाकर 150 कर दिए जाएंगे। न पीने के पानी की विशेष व्यवस्था हो रही है, न पशुओं के दाना-पानी की और न ही फसल के नुकसान के मुआवजे की तैयारी दिख रही है। सरकार मानसून की औपचारिक समाप्ति का इंतजार करेगी, फिर मंत्रालय से पटवारी तक सूखे की जानकारी मांगी जाएगी, फिर पटवारी से मंत्रालय तक फाइल वही सूचना भेजेगी जो सबको पता है। फिर राज्य सरकारें केंद्र के पास गुहार लगाएंगी और फाइलें रेंगती रहेंगी, अकाल फैलता रहेगा।

यह है राष्ट्रव्यापी संकट

मीडिया भी बेपरवाह लगता है। मराठवाड़ा के बारे में कुछ खबरें आई हैं, बाकी कुछ नहीं। वो तो भला हो नाना पाटेकर का, नहीं तो उतनी खबर भी नहीं आती। शहरों में रहने वाले, टीवी देखने वाले 'जागरूक' नागरिक को पता भी नहीं है कि देश इतने बड़े संकट से गुजर रहा है। गांवों में अपने इलाके के सूखे की खबर तो है लेकिन राष्ट्रव्यापी संकट का अहसास नहीं है। जब तक सूखा टीवी पर नहीं दिखेगा तब तक सरकार और प्रशासन को कोई चिंता नहीं होगी। सड़क पर पड़ा कोई व्यक्ति मर रहा है और हम सब उसे अनदेखा कर अपनी-अपनी कार के शीशे चढ़ाये चले जा रहे हैं।

सुकाल में बदलें अकाल

यही वह अकाल है जिसकी ओर अनुपम मिश्र इशारा कर रहे हैं। सूखा कुदरत ने दिया है लेकिन संवेदना का अकाल हमारा अपना पैदा किया हुआ है। अनुपम जी पिछले तीन दशक से पानी के सवाल पर विचारों के अकाल पर भी हमारा ध्यान खींचते रहे हैं। उन्होंने बताया है कि आधुनिक विकास और सिंचाई के नाम पर हमने जल संचय के उन तमाम साधनों और विधियों का नाश कर दिया है जिससे हमारा देश सदियों से सूखे का सामना करता था। इस बार का भयानक सूखा अवसर है यह साबित करने का कि खेत भले ही सूखे हों, हमारा दिल और दिमाग अभी नहीं सूखा, हमारी आँखों में अब भी पानी है। इस सूखे को अकाल नहीं बनने देंगे हम। इस आपदा में किसान अकेला नहीं पड़ेगा। इस सूखे को अकाल नहीं सुकाल में बदल सकते हैं हम।

विकास और सिंचाई के नाम पर हमने जल संचय के उन तमाम साधनों और विधियों का नाश कर दिया है जिससे हम सदियों से सूखे का सामना करते थे। इस बार का सूखा मौका है साबित करने का कि खेत भले ही सूखे हों, हमारा दिल और दिमाग अभी नहीं सूखा, हमारी आँखों में अब भी पानी है।

2025 में भारत में भीषण जल संकट के संकेत!

मानसून पर गठित समिति का आकलन

अनिल अश्विनी शर्मा @ नई दिल्ली

patrika.com/india

एक दशक बाद भारत सबसे बड़ा जल संकट वाला देश बन जाएगा। यह टिप्पणी केंद्रीय जल संसाधन मंत्रालय द्वारा गठित उच्चस्तरीय समिति ने प्रारंभिक आकलन में की है। समिति मानसून की धीमी रफ्तार के मद्देनजर गठित की गई। समिति ने प्रारंभिक आकलन में कहा कि देश में शुरुआती समय में मौसम विज्ञानियों ने कहा था कि इस बार बारिश में बारह फीसदी कमी आएगी लेकिन अब अल नीनो के कारण यह कमी सोलह फीसदी पर जा पहुंची है। समिति ने कहा कि मानसून सही नहीं होने के कारण छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश में जल संकट सर्वाधिक होने का अनुमान है।

प्रबंधन की धीमी गति

समिति ने कहा कि देश में कृषि की बढ़ती जरूरत और जल प्रबंधन के धीमे क्रियान्वयन से स्वच्छ जल पर दबाव तेजी से बढ़ रहा है। देश में केवल पंद्रह फीसदी ही वर्षा जल का उपयोग होता है। शेष बहकर समुद्र में चला जाता है। वर्षा जल को जमीन के अंदर जितना अधिक डालेंगे, उतना ही तेजी से जल संकट से छुटकारा पाया जा सकेगा।

वर्षा जल संग्रहण

समिति ने कहा कि यदि देश में जमीन क्षेत्रफल के पांच फीसदी में होने वाली वर्षा के जल को संग्रहण करें तो एक अरब लोगों को प्रतिदिन सौ लीटर पानी उपलब्ध हो सकेगा। समिति ने कहा कि प्रत्येक बारिश के मौसम में सौ वर्ग मीटर की छत पर 65 हजार लीटर वर्षा जल का संग्रहण किया जा सकता है। इस पानी से चार सदस्यों वाले एक परिवार की पेयजल और अन्य जरूरत आसानी से पूरी की जा सकती है।

पचास प्रतिशत वृद्धि

समिति ने कहा कि 1947 में प्रतिव्यक्ति मीठा जल छह हजार घन लीटर था। यह 2000 में घटते-घटते 2300 घन लीटर रह गया है और बढ़ती जरूरत को ध्यान में रखते हुए 2025 तक यह कमी 1600 घन लीटर हो जाएगी। अगले दो दशक में पानी की मांग पचास प्रतिशत और बढ़ेगी। देश में उपलब्ध कुल जल का नब्बे प्रतिशत कृषि कार्य में उपयोग किया जाता है। समिति ने कहा कि यदि जल का समुचित उपयोग किया जाए तो बीस प्रतिशत बचत की जा सकती है। विश्व के सत्तर फीसदी क्षेत्र में पानी है। इसमें मीठा पानी मात्र तीन प्रतिशत है, शेष खारा है। इसमें भी मात्र एक प्रतिशत पानी का ही उपयोग किया जाता है।

News item/letter/article/editorial published on 25/9/15 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)
Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald
M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

प्रकृति से खिलवाड़

धुएं और प्रदूषण से बारिश कम हो रही

जिन इलाकों में धुआं और प्रदूषण ज्यादा होता है, वहां बादल और तूफान बनने की पूरी प्रक्रिया रुक जाती है। इससे बारिश में भारी गिरावट आती है और सूखे का खतरा बढ़ जाता है। नासा अर्थआब्जर्वेटरी ने सैटेलाइट से ली गई तस्वीरों के आधार पर यह दावा किया है।

चारा जलाने के मौसम में शोध

नासा जेट प्रोपल्शन लैबोरेटरी के वैज्ञानिक माइकल टोस्का ने शोध के लिए पश्चिमी अफ्रीका के जंगल को चुना। तीन सैटेलाइट और मौसम विभाग के डेटा की मदद से शोध सितंबर-फरवरी के शुष्क मौसम में किया गया। इसमें लोग फसल और चारे को जलाते हैं। इससे भयंकर आग और धुआं पैदा होती है।

खत्म हो जाते हैं वायुमंडल के निचले बादल

सैटेलाइट तस्वीरों से पता चला कि धुएं में मौजूद छोटे कण एयरोसॉल वायुमंडल के निचले स्तर पर बनने वाले मेघपुंज बादलों की निर्माण प्रक्रिया को बुरी तरह नुकसान पहुंचाते हैं। उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में इन बादलों का निर्माण सुबह शुरू होता है, दोपहर को ये अपने चरम पर होते हैं और ये शाम को गायब हो जाते हैं। भारत समेत कई देशों में उष्णकटिबंधीय परिस्थितियों के शुष्क मौसम में इन बादलों से काफी बारिश होती है।

बादल पर एयरोसॉल का असर

गहरे रंग के एयरोसॉल प्रकाश का अवशोषण करके बादलों के पास के वातावरण को जमीन की तुलना में गर्म कर देते हैं। इससे जमीन से बादलों की ओर से आने वाली नमी में कमी आती है और बादलों का निर्माण रुक जाता है। हर बादल पर प्रभाव एक जैसा नहीं होता है।

15 नवंबर, 2012 की तस्वीर जब प्रदूषण नहीं था। इसमें बादल ही बादल नजर आते हैं।

18 जनवरी, 2013 की तस्वीर में कम बादल। इस समय चारा जलने से खूब धुआं होता है।

दिल्ली सब डिविजन में कम बारिश का कारण प्रदूषण तो नहीं!

कई रिपोर्ट में दिल्ली को सबसे प्रदूषित शहर माना गया है। मौसम विभाग की रिपोर्ट के मुताबिक 2010 के बाद से दिल्ली सब डिविजन में सामान्य 466.3 मिमी से कम बारिश हुई है।

जून-सितंबर की बारिश (मिमी)
● सामान्य बारिश से अंतर(प्रतिशत में)

देश में बारिश और बादलों के निर्माण पर प्रदूषण के असर के संबंध में कोई शोध नहीं हुआ है। पर यह साबित हो चुका है कि एयरोसॉल बादलों को प्रभावित करता है।

अनुमिता राय चौधरी, पर्यावरण विशेषज्ञ

THE HINDU

» TODAY'S PAPER » NATIONAL

Published: September 26, 2015 00:00 IST | Updated: September 26, 2015 05:44 IST Bengaluru, September 26, 2015

Bengaluru groundwater levels go up thanks to water board's leakages

- Mohit M. Rao

Precious drinking water going waste inBangalore.— FILE Photo: V. Sreenivasa Murthy

Inefficiency in the piped water system may be one of the key reasons that the dense concrete jungle of the city is better off in terms of groundwater levels compared to the green field pockmarked outer lying areas.

While groundwater level has continued to decline in the city, the Central Groundwater Board (CGWB) believes that the nearly 48 per cent of leakage recorded in pipes of the water supply board may have arrested some of the decline in core areas.

"In core areas, we are not seeing any alarming decrease in groundwater level as compared to the suburbs. The heavy leakage of water from BWSSB (Bengaluru Water Supply and Sewerage Board) pipes has contributed to some sort of recharge. The water that leaks from underground water supply pipes end up seeping through to rock fractures and is impacting groundwater level positively," says K.R. Soorya Narayana, scientist and head of CGWB.

While this may sound far-fetched, consider this: BWSSB supplies more than 1,400 million litres of water a day from the Cauvery. In its proposal for a distribution improvement scheme in 2011 to the Japan Investment Cooperation Agency, it admitted that rusty and corroded pipes — especially in Bengaluru south — had led to leakages of up to 48 per cent (Comptroller and Auditor-General pegs the leakage at 51 per cent). This amounts to nearly 650 million litres of day of potable water leaching through the soil and into the groundwater.

Dependence on borewells

However, leakages are only part of the reason for the disparity. BWSSB's network of piped water in the city had led to a lower dependence on groundwater, compared to areas outside, which rely heavily on tubewells or tank water.

A look at 63 BBMP wards (out of the 198 wards) that lie along or out of the Outer Ring Road (traditionally considered non-core areas or newly-added areas) account for more than three-fourths of the total borewells dug in the city. The State government's Groundwater Authority notes that Anekal taluk — which is home to big industries and a fast-growing residential population catering to Electronics City and IT companies in Bannerghatta — is the worst-affected region.

The curious case of how BWSSB's pipeline leakage has helped recharge groundwater levels in core areas

---

Printable version | Sep 28, 2015 2:33:46 PM | http://www.thehindu.com/todays-paper/tp-national/bengaluru-groundwater-levels-go-up-thanks-to-water-boards-leakages/article7690464.ece

© The Hindu

Printed from
THE TIMES OF INDIA

Despite rainfall deficit, kharif sown area rises by 12 lakh hectares

TNN | Sep 25, 2015, 03.41 AM IST

NEW DELHI: In what could be an indication of higher foodgrain production, the country this year recorded an increase of nearly 12 lakh hectares in total kharif sown area as on Thursday compared to the corresponding period last year, despite almost similar amount of rainfall deficit during June-September monsoon season.

The latest figures, released by the agriculture ministry on kharif sown area, show that the total area under summer crops reached 1026.23 lakh hectares as compared to 1014.24 lakh hectare last year at this time.

Except cotton and jute, sown area under other major crops, including pulses and oilseeds, increased this year as compared to 2014 - reflecting the positive impact of contingency measures taken by the government, based on advance input of deficit rainfall from the Indian Meteorological Department (IMD). Such measures had supported farmers in different ways to ensure sowing operation after late revival of monsoon in certain parts of the country.

In fact, sown areas under pulses, oilseeds, sugarcane and cotton are more than the 'normal' sown area of these crops. 'Normal' sown area of a particular crop is calculated as an average of sown area of particular crop in last five years.

Though the area under cotton (115.20 lakh hectares) is less than last year (125.75 lakh hectares), it is still higher than its normal sown area (115.02 lakh hectares).

The country has so far reported 12% deficit in monsoon rainfall, exactly in line with IMD's prediction. This figure will slightly change once the country's national weather forecaster comes out with its final report covering June-September period. The country had last year recorded 12% of monsoon deficit by the end of the season - making it a drought year.

Though the initial report estimates slightly less foodgrain production this year as compared to last year, the increase in sown area shows sign of improvement. Some parts of the country witnessed late start of sowing operation. Rainfall distribution this year has, in fact, been fairly good.

According to agriculture ministry's data, the sown area under rice was 374 lakh hectares as compared to 373 lakh hectares last year. While sown area under pulses stand at 113.45 lakh hectares as compared to 101.83 lakh hectares last year, the area under oilseeds reached 183.68 lakh hectares as compared to 177.49 lakh hectares in 2014.

Though the government's first 'advance estimate' put the total kharif foodgrain production for the year 2015-16 at 124.05 million tonnes (MT) which is 2.26 MT less than the 'actual' kharif output of 2014-15, it is expected that the output would eventually be increased backed by higher sown areas under different crops.

Stay updated on the go with Times of India News App. Click here to download it for your device.

Post a comment

FROM AROUND THE WEB

MORE FROM THE TIMES OF INDIA

Recommended By Colombia

FROM AROUND THE WEB

MORE FROM THE TIMES OF INDIA

Recommended By Colombia

The Tribune
VOICE OF THE PEOPLE

Editorials

Farmers let down

Petty politics over agrarian distress in Punjab

Published on: Sep 26 2015 12:19AM

The just-concluded Punjab Assembly session saw another round of cheap politics on play, disregarding the deepening agricultural crisis in the state. Basmati, sugarcane and cotton growers are in distress more than other farmers. The monsoon rain, as predicted, was deficient but no effort has been made to take steps to conserve rainwater, promote drip irrigation or discourage paddy cultivation. The whitefly attack has destroyed cotton on 11,780 acres in six districts and the sale of fake pesticides has exacerbated the crisis.

The precarious situation presented the Opposition an opportunity to rise to the occasion but the Congress is so embroiled in its internal faction-fights that it also let down the farmers. It started well by targeting three Akali ministers — Tota Singh for the Rs 33-crore pesticide scam, Adesh Partap Singh Kairon for the failure to distribute subsidised sugar and kerosene among the poor and Gulzar Singh Ranike for the non-payment of SC scholarships. But infighting in the party prevented a meaningful outcome.

On his part, the Punjab Chief Minister blamed the weather for the agrarian crisis and refused to accept that his government had anything to do with it. On the day he spoke in the Assembly, a Bathinda farmer killed himself, squarely blaming the government for his plight. If the government has no role in the cotton crisis, why has it removed the Agriculture Director? If the Director is responsible, how can the Agriculture Minister escape responsibility? The scandalous purchase of a pesticide from a particular company at a higher-than-market price without inviting competitive bids needs an independent probe. Grossly under-estimating the farmers' loss and displaying cruel insensitivity, the government announced a Rs 10 crore relief. It rubbed salt into farmers' wounds by paying as little as Rs 80 to a farmer for his crop loss. Despite being a farmer himself and a leader of a party that has a base in the peasantry, Chief Minister Badal has not been able to face the challenge of agriculture and improve farmers' plight. His diagnosis and treatment have not worked, and he is reluctant to try new ways.

Printed from
THE TIMES OF INDIA

Good rains bring bad news for the poor in parched Maharashtra

Sujit Mahamulkar,TNN | Sep 25, 2015, 07.09 AM IST

MUMBAI: The late burst of rainfall for 10-12 days is good news for the Maharashtra government, but may be bad news for some families in Marathwda and Vidarbha. The state bears a burden of Rs 84 crore every month to provide foodgrains at a subsidized rate in 14 districts of the two regions, which could be cut by half.

The government had started giving foodgrains at subsidized rates in eight districts in Marathwada and six districts from Vidarbha under the food security scheme from August 15. About 60 lakh farmers from perennially droughtprone regions get wheat at Rs 2 per kg and rice at Rs 3 per kg.

Finance minister Sudhir Mungantiwar said the rain gods had come to the government's re scue. "The government spends almost Rs 1,000 crore on subsidized foodgrains for two drought-affected regions. But the rain may help save some money, as the severity (of the drought) has reduced," he said. "Though we will continue the subsidy till next June, the gravity will reduce," the minister said.

An official, however, said the scheme could be withdrawn in few places where the farmers' condition will improve with the rabbi crop. "This may mean a 50% saving in subsidies, which is of Rs 500 crore," the official said.

Chief minister Devendra Fadnavis had said on Monday that with the latest rainfall the drinking water scene had also greatly improved.

Stay updated on the go with Times of India News App. Click here to download it for your device.

Post a comment

FROM AROUND THE WEB

MORE FROM THE TIMES OF INDIA

Recommended By Colombia

FROM AROUND THE WEB

MORE FROM THE TIMES OF INDIA

Recommended By Colombia

Heavy inflow keeps tourists away

Walkways flooded up to one feet in Hogenakkal

The Hindu · 27 Sep 2015 · 7 ·

The water level in river Cauvery witnessed an overnight rise to 30,200 cusecs, forcing the administration to close down Hogenakkal for tourists on Saturday.

P. V. Srividya and Syed Muthahar Saqaf

DHARMAPURI/ SALEM: The water level in Cauvery rose to 30,200 cusecs due to heavy inflow, forcing the administration to ban tourists from visiting Hogenakkal on Saturday.

The discharge into Biligundulu was manifold compared to the inflow in the past week.

The last three days witnessed an inflow of 8,000 cusecs from Kabini and Krishnaraja Sagar reservoirs into Biligundulu and Hogenakkal. The rains that lashed the catchment areas of the Cauvery that included Mandya, Kollegal, Mekadatu, Rasimanal on Friday added to the discharge of 13,000 cusecs from the two key reservoirs as of Friday evening.

However, the discharge into Hogenakkal reached a whopping 30,000 cusecs on Friday night and the level at Biligundulu as of Saturday morning was 30,200 cusecs.

The rise in the discharge has inundated the walkways up to one feet in Hogenakkal. The revenue authorities have also issued flood threat to low lying villages.

Heavy inflow into Mettur dam

The Mettur Dam has been registering heavy inflow since Friday night, thanks to the widespread rainfall in the catchment areas of river Cauvery in Karnataka.

The inflow into the dam which stood at 8,339 cusecs on Friday evening rose to 27,000 cusecs on Saturday morning. The water level in the dam which stood at 66.46 feet on Friday rose to 67.24 feet on Saturday evening against its full level of 120.

The storage level was 30.37 tmcft against the dam's capacity of 93.470 tmcft. The discharge from the dam for the samba cultivation was brought down from 13,000 cusecs on Friday to 12,000 cusecs on Saturday evening.

The Tribune
VOICE OF THE PEOPLE

Himachal » Community

Mild snow in tribal dists, mercury dips

Published on: Sep 28 2015 12:23AM

Tribune News Service

Shimla, September 27

The minimum temperatures dropped sharply by three to five degrees in tribal areas and higher hills as region received rains and high altitude tribal areas experience mild snowfall.

As per the MeT office the monsoon is in the withdrawal phase and weather is likely to remain dry over the next six days till October 3.

The region received 613.4 mm rain against an average normal rainfall of 838.7 mm and tribal districts of Lahaul and Spiti and Kinnaur recorded 68 per cent and 53 per cent deficit rains followed by Chamba (-48 per cent), Sirmaur (-41per cent), Solan (-24 per cent), Bilaspur (-19 per cent), Mandi (-17 per cent) and Hamirpur (-13 per cent).

The mercury dropped sharply in tribal areas and higher hills and Keylong and Kalpa in tribal districts recorded a minimum temperature at 5.9°C and 6.8°C, followed by Manali 8.6°C, Dalhousie 10°C and Shimla 12.8°C, a drop of three to four degrees.

Solan and Bhuntar recorded a low of 13.4°C, followed by Una and Sundernagar 14.2°C, Dharamsala 15.2°C and Nahan 18.3°C. Dalhousie was the wettest in the region with 31 mm rains, followed by Sujanpur Tira 17 mm, Sarahan 26 mm, Jogindernagar 15 mm, Seobagh 14, Manali 12 mm, Pandoh and Saloni 9 mm, Baldwara 6mm, Sundernagar and Kahu 5 mm and Shimla 2 mm.

Una was the hottest in the region with maximum temperature at 33.5°C, while Sundernagar 30.3°C and Bhunter recorded a high of 30.3°C and 30.2°C, followed by Solan 28.0°C, Dharamsala 26.8°C, Nahan 26.2°C, Shimla 22.5°C and Kalpa 18.8°C.

The monsoons had withdrawn on September 26 last year and it is likely to withdraw in the next three-four days this year.

Printed from
THE TIMES OF INDIA

Monsoon may retreat from state in two days: IITM forecast

Neha Madaan,TNN | Sep 26, 2015, 01.30 AM IST

PUNE: Do not expect any rejuvenating rains in the remaining days of September. Rainfall during the week was 68% above the long period average (LPA) over the country but the remaining part of September may witness subdued rainfall, a fresh extended range forecast by the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM) has said.

With the two monsoon systems which were to provide rainfall to the country gone, the withdrawal of the southwest monsoon will now begin from the rest of northwest India, and may even be faster from western and central India. The monsoon may withdraw from parts of central India as well as Maharashtra in the next couple of days, the model's forecast shows.

An India Meteorological Department (IMD) official said that chances of rain-bearing systems over northwest India are now slim, indicating the withdrawal of the monsoon.

In fact, with the formation of a low pressure system in the southern Bay of Bengal, the northeast monsoon is expected to start in the first week of October. The period from October to December is referred to as the northeast monsoon season over peninsular India. Earlier, this period was also referred to as "post-monsoon season" or "retreating southwest monsoon season".

The northeast monsoon season is the major period of rainfall activity over the south peninsula, particularly in the eastern half comprising the meteorological subdivisions of coastal Andhra Pradesh, Rayalaseema and Tamil Nadu-Pondicherry.

An IITM scientist told TOI that with the two systems dissipating after giving above normal rainfall in parts of the country, the monsoon withdrawal will soon start once again. The monsoon usually withdraws from central India and parts of Maharashtra from October 1.

The scientist said the northeast monsoon's performance during the first week of October looks promising. "The models are showing a system over the southern tip of the peninsula which may give good rainfall over the peninsula during the first week of October," he added.

Meanwhile, met department officials said that during the week from September 17 to 23, 64% sub-divisions received excess rainfall and 17% normal rainfall. All the four homogeneous regions of India - northwest India, central India, south peninsula and east and northeast India - received above normal rainfall during the week, except south peninsula, where the rainfall was 38% below the LPA.

However, cumulative rainfall for India as a whole during the southwest monsoon from June 1 till September 23 has been 12% below the LPA. Rainfall activity was less than normal in all four homogeneous regions of the country during this period, met department officials said.

Pune's total rainfall since June 1 stands at 471.6mm, around -56.9mm below normal. In the next few days too, the city may only see one or two spells of rain and partly cloudy skies.

Stay updated on the go with Times of India News App. Click here to download it for your device.

Post a comment

FROM AROUND THE WEB

MORE FROM THE TIMES OF INDIA

Recommended By Colombia

FROM AROUND THE WEB

MORE FROM THE TIMES OF INDIA

Recommended By Colombia

Printed from
THE TIMES OF INDIA

Okhla drowning in groundwater

Jayashree Nandi,TNN | Sep 26, 2015, 11.47 PM IST

NEW DELHI: Parts of Okhla are facing a bizarre problem- the groundwater table here is so high that they have to pump out excess water and discharge it into sewers. This is happening at a time when several parts of the capital are parched, including neighbouring Sangam Vihar that largely depends on tankers for its supply. Residents claim that if they don't carry out this exercise, buildings are at risk of damage due to flooding in basements.

The Okhla Industrial Estate Association claims it has written to the chief minister and various government agencies asking them to de-water the area and has now decided to file a petition in the National Green Tribunal.

"We de-water the area and release the water in the sewers. What can we do? We have been requesting the government to do something. We have met officials at least 20 times and have also written to them," said a member of the association. It has around 300 members.

"There is too much water in the basements because of which our lifts don't work. The same problem is being faced by residents of Sukhdev Vihar and Siddhartha Enclave. Why can't Delhi Jal Board extract the excess water?" asked another member.

They claim that water levels rose up to the surface from 2013 onwards. According to a recent investigation by the Central Ground Water Authority (CGWA) that TOI reported, water levels in many parts of southeast Delhi started coming up after they received piped DJB water supply from the Sonia Vihar treatment plant.

People stopped depending on borewells for water completely. The area was notified as an "over-exploited" zone which also placed several restrictions on groundwater extraction. These areas continue to be categorized as "over-exploited" zones.

Certain tests found high E.coli levels in the water because of which Delhi Jal Board declined using it. But scientists insist that the water be used for non-potable purposes after treatment.

"I think the government can demarcate shallow water table areas and install tubewells so that the water can be used by neighbouring areas like Sangam Vihar which is always facing shortage. The government may also consider denotifying certain parts temporarily depending on the current groundwater table there. There should also be systematic sampling to determine if the water is potable," said Shashank Shekhar, a hydrogeologist and assistant professor of geology at Delhi University.

Stay updated on the go with Times of India News App. Click here to download it for your device.

Post a comment

FROM AROUND THE WEB

MORE FROM THE TIMES OF INDIA

Recommended By Colombia

FROM AROUND THE WEB

MORE FROM THE TIMES OF INDIA

Recommended By Colombia

THE TIMES OF INDIA
Powered by *INDIATIMES*

About us | Privacy policy | Newsletter | Sitemap
Advertise with us | Feedback | TOI Mobile | Archives
Terms of Use and Grievance Redressal Policy | RSS | ePaper

Other Times Group news sites
The Economic Times | इकनॉमिक टाइम्स | ઈકોનોમિક ટાઈમ્સ | Pune Mirror | Bangalore Mirror | Ahmedabad Mirror | ItsMyAscent | Education Times | Brand Capital | Mumbai Mirror | Times Now | Indiatimes | नवभारत टाइम्स

Living and entertainment
Timescity | iDiva | Entertainment | Zoom | Healthmeup | Luxpresso | Gadget Reviews | Online Songs

Interest Network
itimes

Hot on the Web
World | Politics | Business | Sports | Entertainment | New Cars | Xiaomi Mobile | Motorola Mobile

Services
Book print ads | Online shopping | Free SMS | Website design | CRM | Tenders | Matrimonial | Ringtones | Astrology | Jobs | Tech Community | Property | Buy car | Bikes in India | Free Classifieds | Send money to India | Used Cars | Restaurants in Delhi | Movie Show Timings in Mumbai | Remit to India | Buy Mobiles | Listen Songs | Real Estate Developers

Trending Topics
Samsung Mobile | Micromax Mobile | You Tube | Delhi Travel Guide | Katrina Kaif

DECCAN Chronicle
Published on *Deccan Chronicle* (http://www.deccanchronicle.com)

Rain knocks out tree at Niloufer Hospital

Deccan Chronicle | September 26, 2015, 01.20 am IST

Motorists wade through a heavily clogged street under the Malakpet bridge as heavy rains lashed the city on Friday. (Photo: DECCAN CHRONICLE)

Hyderabad: Heavy rainfall and gusty winds lashed Hyderabad on Friday evening.

The wind knocked down a huge tree at Niloufer Hospital, however, no serious injuries reported. Heavy rains were reported at Uppal, Malakpet, Malkajgiri, L.B Nagar, Marredpally, Secunderabad, Begumpet and other areas. Incidents of trees falling were reported at the Secretariat, Nampally, Kachiguda and Basheerbagh.

Heavy rainfall is expected for the next four-five days in the city.

At the road under-bridge at Malakpet, commuters were stuck in knee-high water. Traffic came to a halt at major junctions.

Tags: nation [1]
South [2]
Niloufer Hospital [3]
rain [4]

DH
DECCAN HERALD
Monday 28 September 2015
News updated at 2:13 PM IST

Rains lash Gadag, Ch' nagar

September 26, 2015,Gadag/Chamarajanagar, DHNS

Nargund, the nerve centre of Mahadayi agitation, witnessed moderate to heavy rainfall on Friday evening. Rains pounded the town for over 20 minutes bringing the soaring temperature down.

The rains exposed poor civic infrastructure in the town as rainwater mixed with sewage spilled onto roads in the low-lying areas including Dandapur area in the town. The farmers however are happy that the Friday evening rain would help the rabi crops thrive.

Traffic was disrupted over the whole night on the inter-state highway that connects Sathyamangala from Hanur in Chamarajanagar as a tree got uprooted due to heavy rains on Thursday night.

Most parts of Malavalli taluk in Mandya too received heavy rains on Thursday.

Go to Top

E-mail this Page Print this Page Bookmark
Tweet 0 G+1 0

0 Comments Deccan Herald 1 Login
Recommend Share Sort by Best
Start the discussion…
Be the first to comment.
Subscribe Add Disqus to your site Privacy

Videos

Kalasa-Banduri protest, bandh total in Bengaluru

Saudi Arabia calls for haj stampede investigation...

Fake iPhone 6s on sale in China...

India's goat sellers flock to Internet this...

Subscribe - Deccan Herald's YouTube channel

more videos

Most Popular Stories now

Commented | **Emailed** | **Viewed**

- 100 pilgrims killed near Mecca during haj
- Need to delink terror from religion: PM Modi
- Modi signs national flag, sparks controversy
- FIR against KS Bhagwan for hurting religious sentiments
- CID charges pontiff with rape after matching DNA
- BJP indicates support for quotas for poor among upper castes
- Digital India to transform the way India will live, work: Modi

Photo Gallery

Indian Air Force an 'Air Fest-2015' in Nagpur on Sunday...

more

Copyright 2014, The Printers (Mysore) Private Ltd., 75, M.G Road, Post Box 5331, Bengaluru - 560001
Tel: +91 (80) 25880000 Fax No. +91 (80) 25880523

DH
DECCAN HERALD
Monday 28 September 2015
News updated at 2:13 PM IST

Sudden rain sends City into a tizzy

Bengaluru, Sep 25, 2015, DHNS

Bengalureans who were heading outdoors or out of the City to enjoy the long weekend were greeted with a sudden downpour on Thursday evening.

The unexpected showers brought traffic to a halt in many parts of the City including Hudson Circle, Garuda Mall Junction, Windsor Manor Junction, T Chowdaiah Road and surrounding areas.

A tree was uprooted on 1st Main in Kempanna Layout. Water logging was reported at Anil Kumble Circle. The Bruhat Bengaluru Mahanagara Palike control room did not receive many complaints.

According to Indian Meteorological Department (IMD) officials the City recorded 13.2 mm rainfall up to 5.30 pm, HAL airport received traces (0.1mm) of rain, while the international airport did not receive any rainfall at all. IMD has forecast thunder showers for the next couple of days. Mercury levels are also expected to dip, according to IMD officials.

Go to Top

E-mail this Page Print this Page Bookmark
Like 0 Tweet 1 G+1 0

0 Comments Deccan Herald 1 Login
Recommend Share Sort by Best
Start the discussion…
Be the first to comment.
Subscribe Add Disqus to your site Privacy

Videos

Kalasa-Banduri protest, bandh total in Bengaluru

Saudi Arabia calls for haj stampede investigation...

Fake iPhone 6s on sale in China...

India's goat sellers flock to Internet this...

Subscribe - Deccan Herald's YouTube channel
more videos

Most Popular Stories now

Commented Emailed Viewed

- 100 pilgrims killed near Mecca during haj
- Need to delink terror from religion: PM Modi
- Modi signs national flag, sparks controversy
- FIR against KS Bhagwan for hurting religious sentiments
- CID charges pontiff with rape after matching DNA
- BJP indicates support for quotas for poor among upper castes
- Digital India to transform the way India will live, work: Modi

Photo Gallery

e road near Sophia Indian Air Force an ' more

Copyright 2014, The Printers (Mysore) Private Ltd., 75, M.G Road, Post Box 5331, Bengaluru - 560001
Tel: +91 (80) 25880000 Fax No. +91 (80) 25880523

EditionName:The Times of India
PageNo:011

Printed from
THE TIMES OF INDIA

Weather department hits bull's eye for the first time with prediction of drought year

Amit Bhattacharya,TNN | Sep 25, 2015, 03.45 AM IST

A hawan for drought relief being conducted by Ganaraj Sarvjanik Mandal at Mumbai's Fort Market. (TOI photo)

NEW DELHI: In April this year, the Indian Meteorological Department had stuck its neck out and warned the country of a second straight drought this year. It was IMD's bleakest monsoon forecast, the first time it had predicted a rain shortfall of more than 10%. As it turned out, IMD was spot on.

As on September 24, the monsoon deficit for the season was 13%, as against the department's forecast of 12%. With less than a week to go for the end of the monsoon season (September 30), officials do not expect the deficit to change much.

"Our forecast had an error margin of 4% on either side. The actual monsoon performance is likely to fall within a margin of 2%," said B P Yadav, director, IMD.

READ ALSO: Monsoon fails to bring cheer to Sagar, Srisailam

IMD calls a countrywide monsoon shortfall of 10% or more as 'deficient monsoon'. Popularly, it is known as a drought year - a term previously used by the department but later discontinued because, as an official put it, the entire country never faces a drought.

Although last year too, IMD had pared down its forecast in phases to eventually reflect the drought, this IMD prediction was a first in more than one way. It was the first time that IMD issued a forecast of deficient monsoon in April itself, and flowing from that, the first time that it accurately predicted a drought.

Officials say, coming as it did in the shadow of last year's drought, it wasn't easy for the department to go along with the scientific findings and issue a forecast warning of a second straight drought in the country.

READ ALSO: Monsoon retreat begins as rain deficit grows to 13%

As Yadav put it, "It required a lot of courage for us to come out with this kind of a prediction this year."

IMD's director-general L S Rathore said the early warning about this year's weak monsoon helped farmers cope with the situation much better. "Our advisories to farmers on sowing short-duration crops, and those requiring less water, such as pulses, were followed by farmers in a big way. That's how such early warnings help the country," he said.

Rathore was also disappointed over the "disproportionate" attention given by a section of the media to a private weather company's forecast of a normal monsoon this year. "As of now, IMD alone has the infrastructure and the experience to make long range forecasts with a degree of accuracy in the country," he said.

Officials said after five days or so, the monsoon would swiftly start withdrawing from the country, beginning with parts of northwest India.

Back-to-back droughts are extremely rare, having occurred only thrice since 1900, the last instance being 1986-87.

Stay updated on the go with Times of India News App. Click here to download it for your device.

Post a comment

FROM AROUND THE WEB

MORE FROM THE TIMES OF INDIA

Printed from
THE TIMES OF INDIA

Yamuna cries on Ganpati visarjan

Suraksha.P | Sep 27, 2015, 11.57 PM IST

NEW DELHI: The afternoon sun was blazing down, but that did not deter trucks packed with gulaal-smeared faces to make a beeline at Kalindi Kunj ghat so that Ganesha idols could be immersed in the Yamuna. Amidst the loud music, honking and chants of Ganapati Bappa Moriya, the crowd drowned in puja material, rotting flowers, garlands, oil, discarded wicks and earthen lamps in stark violation of National Green Tribunal (NGT) orders.

In the backdrop of the Okhla barrage churning thick white industrial foam, men and women swam in the putrid water of the Yamuna while immersing their non-biodegradable idols.

On September 18, NGT had ordered that only biodegradable idols should be immersed at the nine identified ghats. The flood and irrigation department, DDA, municipal corporations and Delhi government had been ordered to coordinate to bring NGT's orders to fruition.

However, from trucks bringing huge colony idols painted in flashy florescent colours to modest families bringing smaller idols, everyone had an idol made of Plaster of Paris.

On the 11th day since Ganesh Chaturti, which marks the culmination of the festivities, the Kalindi Kunj ghat had everything from Delhi Police personnel, home guards, Delhi civil defence volunteers, CCTVs, ambulances, fire tenders, mobile toilets and stalls that read 'deposit plastic and other puja material here' for the immersion.

Convener of Yamuna Jiye Abhiyan, Manoj Mishra said, "Since there are multiple agencies and different ghats, Delhi government and DDA were supposed to coordinate and decide which one would be looked after by whom. Clearly this hasn't happened at Shyam Ghat, Hathi Ghat, Chhath Ghat, Geeta Colony Ghat, Kalindi Kunj, Qudsia, Mayur Vihar, Ram Ghat or Nigambodh Yamuna Bazar Ghat."

In a large tent set up by Delhi Police, an officer was constantly on his toes announcing whereabouts of children looking for their parents, lost mobile phones or of families hunting for their relatives. Another officer kept an eye on the CCTV footage from cameras installed at multiple locations.

Additional DCP (southeast), Vijay Kumar said, "We have 50 civil defence volunteers, 30 home guards, eight CCTVs, first aid kits, two CATS ambulances, three PCRs and two fire tenders. We have been here since 10am and will be here till 11pm." Three boats of Delhi government were stationed to help those devotees who paddled a few yards into the water and immerse their idols.

While the security and traffic arrangements were impressive, the crucial thing - the immersion itself - remained unchecked.

Om Veer who had been visiting the ghat from the past three years was there with his 12-member joint family for the immersion. "I see that the crowds have surged since last year," he said. Sonu Naroda had come all the way from Punjabi Bagh. "I have been doing this for the past 25 years. I got the idol from the streets. I don't know if it's biodegradable," she said.

Anil Kumar and Monu Vaid were among a group of youngsters who brought their six foot idol from Ambedkar Nagar, Dakshinpuri. Like other colonies, they too had crowdsourced funding for a grand 10-day celebrations and Sunday was the final day.

Stay updated on the go with Times of India News App. Click here to download it for your device.

Post a comment

FROM AROUND THE WEB

MORE FROM THE TIMES OF INDIA

Recommended By Colombia

FROM AROUND THE WEB

MORE FROM THE TIMES OF INDIA

Recommended By Colombia

बिहार विधानसभा चुनाव-2015 LIVE क्लिक करें मतदान के लिए दिन बाकी 13 दिन : 16 घंटे : 34 मिनट : 36 सेकेंड

बेमानी हो चुका है नदी संरक्षण का मुद्दा

ज्ञानेन्द्र रावत, पर्यावरण कार्यकर्ता

First Published:25-09-2015 09:01:05 PM Last Updated:25-09-2015 09:01:05 PM

कल हम फिर नदी दिवस मनाएंगे। हालांकि देश की तकरीबन सभी नदियों के सामने अस्तित्व का संकट मुंह बाए खड़ा है। प्रदूषित तो शायद सभी नदियां हैं, लेकिन 70 फीसदी तो इतनी प्रदूषित हैं कि जल्द ही वे नदी कहलाने लायक भी नहीं रहेंगी। देश की 290 नदियां इस कदर प्रदूषित हैं कि उनमें जलीय पौधों और जंतुओं का जीना दूभर है। नदियों की पूजा करने और उन्हें आस्था का केंद्र मानने वाले देश में उनका यह हाल बताता है कि अपने जीवनदायिनी जलस्रोतों के साथ हम क्या सलूक कर रहे हैं। हमारी बहुत सारी नदियां गरमी का मौसम आते-आते दम तोड़ देती हैं, कहीं सूख जाती हैं, तो कहीं वे नाले का रूप धारण कर लेती हैं और कहीं जल रहता भी है, तो इतना दूषित हैं कि वह पीने लायक भी नहीं रहता है।

अक्सर हम औद्योगीकरण को इसके लिए जिम्मेदार ठहराते हैं, लेकिन नदी पूजने वाले भी इसके लिए कम दोषी नहीं हैं। वे भी नदियों को प्रदूषित करने में बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। नदी किनारे बने होटल, संतों के आश्रम और निजी संस्थान भी कम जिम्मेदार नहीं हैं, जो खुलेआम गंदगी को नदियों में गिराते हैं। विडंबना यह भी है कि जो लोग नदियों पर निर्भर हैं, वे कई कारणों से इन्हें खत्म करने पर तुले हुए हैं। टेरी का एक अध्ययन बताता है कि छत्तीसगढ़ की महानदी, अरपा व मध्य प्रदेश की नर्मदा और सोन में बहने वाले पानी की गुणवत्ता को नष्ट करने में 43 फीसदी स्थानीय नागरिक जिम्मेदार हैं। ऐसी हालत कमोबेश पूरे देश की है। ऐसे 90 फीसदी लोग तो नदियों के जीवन के बारे में सोचते तक नहीं। यह हाल तो तब है,जब हमारे यहां हर नदी के साथ आध्यात्मिक परिदृश्य भी जुड़ा हुआ है।

हमारे देश में तकरीबन 45 हजार किलोमीटर नदियां बहती हैं। देश में 12 बड़े और 46 मध्यम तथा 14 लघु नदी बेसिन हैं। नदियां कृषि कर्म का आधार रही हैं। हमने नदियों का दोहन तो भरपूर किया। उनसे लिया तो बेहिसाब, लेकिन यह भूल गए कि जिस दिन इन्होंने देना बंद कर दिया या वे देने लायक नहीं रहीं, उस दिन क्या होगा? देश में जब-जब नदी बचाने की बात की जाती है, तो अक्सर लंदन की टेम्स नदी का उदाहरण दिया जाता है कि हम अमुक नदी को टेम्स बनाएंगे। यमुना के साथ भी यही हुआ। हजारों करोड़ खर्च करने के बाद हमारी नदियां टेम्स तो नहीं बन पाईं, अलबत्ता वे बीमारियों का घर जरूर बन गईं।

नदियों की सफाई से ज्यादा जरूरी यह सुनिश्चित करना है कि अब नदियों में और गंदगी नहीं बहाई जाए। नदी किनारे बसे शहरों, कस्बों, गांवों और उद्योगों से कहना होगा कि वे अपनी गंदगी का खुद ही निस्तारण करें, उसे नदियों के हवाले न करें। इसके लिए उनकी हर तरह से मदद भी की जानी चाहिए। फिलहाल अगर हम इतना ही कर सके, तो हमारी नदियों का काफी भला हो जाएगा। यह नदियों की सफाई के नाम पर पैसे बहाने से ज्यादा जरूरी है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

0 0

नदी दिवस | जलीय पौधों | जंतुओं का जीना दूभर है | नदियों की पूजा |

अन्य खबरें by Taboola

इंदिरा के पूर्व सहायक ने किया ये खुलासा

शादी के लिए चाहिए ऐसा लड़का...

लड़की को प्रपोज करने का ये है बेस्ट दिन

संता को मिला बिना इंट्रेस्ट का लोन

जरूर पढ़ें

किसने हैक किया शाहिद कपूर का फेसबुक अकाउंट!

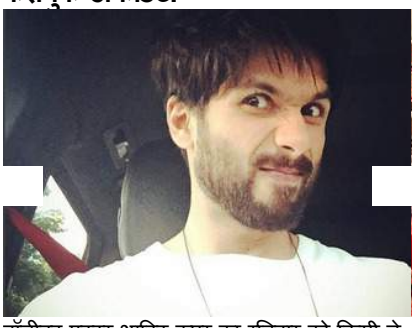

बॉलीवुड एक्टर शाहिद कपूर का रविवार को किसी ने फेसबुक अकाउंट हैक कर लिया। शाहिद ने ट्वीट कर इसकी जानकारी.....

क्रिकेट

...जब धोनी ने कर दी डैरेन गॉफ की 'बोलती बंद'

टीम इंडिया के कैप्टन कूल महेंद्र सिंह धोनी ने इंग्लैंड के पूर्व तेज गेंदबाज डैरेन गॉफ का भले ही मैदान पर सामना ना किया हो लेकिन ट्विटर पर दोनों के बीच मजेदार टक्कर देखने को मिली है।

- झारखंड पर्यटन के ब्रांड एंबेसडर होंगे धौनी
- ...तो अब राजनीति में कूदेंगे वीरेंद्र सहवाग
- भारत दौरे से पहले दक्षिण अफ्रीका को दो बड़े झटके

अन्य खबरें

क्रिकेट स्कोरबोर्ड

Current	Upcoming	Recent
ZIM vs PAK	Sep 29,2015, 16:30 (IST)	
ZIM vs PAK	Oct 01,2015, 13:00 (IST)	
IND vs SA	Oct 02,2015, 19:00 (IST)	

Other Fixtures

Others

मनोरंजन

खास अंदाज में नीतू ने कहा बेटे रणबीर को 'Happy Birthday'

- बॉलीवुड दबंग सलमान खान हैं इस हॉलीवुड स्टार के फैन
- किसने हैक किया शाहिद कपूर का फेसबुक अकाउंट!

अन्य खबरें